Biography of Freda Bedi

SUMMARY OF

DISSERTATION

Submitted To

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

(A CENTRAL UNIVERSITY)

LUCKNOW

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करूणा

ESTABLISHED 1996

In Fulfillment for the Award of

Master of Philosophy

in

HISTORY

Submitted By :

Sanghmitra Gautam

ENROLLMENT NO. 1162/16

Under the Supervision of :

Prof. Shura Darapuri

HEAD OF DEPARTMENT

DEPARTMENT OF HISTORY

SCHOOL FOR AMBEDKAR STUDIES

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY

(A CENTRAL UNIVERSITY)

VidyaVihar, Raebareli Road Lucknow-226025(U.P), India

2018

सारांश

फ्रेडा बेदी कभी–कभी फ्रिदा बेदी और साथ ही सिस्टर पालमों या जेलांगामा करमा केचोग पालमों के नाम से भी जाना जाता था फ्रेडा बेदी एक ब्रिटिश महिला थी जो कि पहली पश्चिमी महिला जिसने तिब्बती बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। जिसका जन्म 5 फरवरी 1911 डर्बी इंग्लैण्ड में हुआ था। फ्रेडा बेदी के पिता का नाम फ्रॉन्सिस एडविन हॉल्सटन और माता का नाम नेल्ली डायना हैरिसन था। फ्रेडा महज 8 महीने की थी जब उनके पिता की मृत्यु प्रथम विश्व युद्ध में हुई थी।

फ्रेडा ने अपनी शिक्षा पार्कफील्ड सैडर्स स्कूल से की और कुछ साल सॉरबॉन पैरिस में भी शिक्षा प्राप्त की। फ्रेडा ने अपने एम0ए0 की शिक्षा सेंट हॉग्स कॉलेज ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अंग्रेजी, दार्शनिक अध्ययन तथा राजनीतिक शास्त्र से किया। जहॉ उनकी मुलाकाल बाबा प्यारे लाल बेदी से हुई जो कि भारतीय पंजाबी सिख थे, वह सिख धर्म के संस्थापक गुरू नानक 1469–1539 के सोलहवें वंशज थे जिनका परिवार अभी भी गुरू नानक द्वारा बसाये हुए पितृभूमि पर रहते थे। बाबा प्यारे लाल बेदी ने फ्रेडा बेदी से ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के ऑक्सफोर्ड रजिट्रार में 1933 में विवाह कर लिया। 1934 में बी0पी0एल0 बेदी फ्रेडा के साथ भारत आ गये तथा फ्रेडा बेदी ने भारत आने पर ब्रिटिश राज से भारत को आजादी दिलाने के लिए महात्मा गॉधी के सत्याग्रह आन्दोलन में सत्तानवे सत्याग्रही के रूप में संघर्ष किया तथा जेल भी गयीं और फ्रेडा बेदी भारत को आजादी दिलाने के लिए बहुत सी परेशानियों का सामना किया। फ्रेडा विदेश कल्याण मंत्रालय की तरफ से सलाहकार बन कर बर्मा गयीं जहाँ बौद्ध धर्म से पहली बार साक्षात्कार हुआ । चीन द्वारा तिब्बत पर हमला किये जाने से सभी तिब्बती शरणार्थी भारत आ गए फ्रेडा बेदी जवाहर लाल नेहरू के आदेशानुसार वह उनकी मदद् के लिए गयी।

फ्रेडा बेदी ने सामाजिक कार्यों के लिए खुद को समर्पित कर दिया था। फ्रेडा बेदी के बर्मा में बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित हुई थीं तथा तिब्बती शरणार्थियों के आने के पश्चात् फ्रेडा बेदी तिब्बती बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित हुई और फ्रेडा बेदी 16वें करमापा जो कि काग्यू स्कूल के संस्थापक से भी प्रभावित थी। फ्रेडा बेदी ने दलाई लामा के साथ दिल्ली के ग्रीन पार्क में 'यंग लामा होम स्कूल' स्थापित किया। फ्रेडा बेदी ने युवा तिब्बती भिक्षुओं का आध्यात्मिक सलाहकार चोग्यम त्रंग्पा, थूबेतन ज़ोपा रिनपोछे, एकांग रिनपोछे, तुलकू पेमा तेन्ज़िन, जेलेक रिमपोछे, लामा येशे लोसल रिनपोछे और तुलकू उरग्येन रिनपोछे के पुत्र चोक्पी नयिम को बनाया। फ्रेडा बेदी ने कुछ समय पश्चात् 1963 में 'यंग लामा होम स्कूल' लामा करमापा थिनलेय रिनपोछे के साथ डलहोजी में भी करमापा के देख–रेख में स्थापित किया। फ्रेडा बेदी ने भिक्षुणियों को भिक्षुओं के समान अधिकार और सम्मान दिलाने के लिए थ्रिलिंग आंदोलन चलाया। जिसके तहत भिक्षुणियों के लिए 'करमा द्रुबग्ये थारगय लिंग ननरी' नामक मठ की प्रतिष्ठापक बनी जो कि तिलोकपुर में 'कांगरा घाटी पर स्थिति है। बाद में यंग तुलकू स्कूल को बन्द कर फ्रेडा बेदी रूमटेक सिक्किम में करमापा की गद्दी पर निर्वासित हुई और 1966 में 16 वें करमापा द्वारा पूर्ण रूप से बौद्ध भिक्षुणी की दीक्षा ली और करमापा ने उन्हें 'जेलोंन्गामा करमा केचोग पालमों' नाम दिया। और वह पहली तिब्बती बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने वाली पश्चिमी महिला बनी। फ्रेडा बेदी का दीक्षा समारोह हॉग–कॉग में हुआ और फ्रेडा ने कई देशो में तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया तथा कुछ समय पश्चात् फ्रेडा की मृत्यु नई दिल्ली में 26 मई 1977 में हुई थी। फ्रेडा बेदी के तीन पुत्र रंगा बेदी, कबीर बेदी फिल्म नायक, तिलक जहीर बेदी जिनकी मृत्यु हो गयी थी और एक पूत्री गुलहिमा बेदी है।

उद्देश्य–

- बौद्ध धर्म में फ्रेडा बेदी का एक भिक्षुणी के रूप में क्या योगदान है?
- फ्रेडा बेदी के शुरूआती जीवन को जानना।
- तिब्बती बौद्ध धर्म में फ्रेडा बेदी का क्या योगदान था?
- फ्रेडा बेदी का महिला सशक्तिकरण के लिए योगदान।
- भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका योगदान।
- महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के साथ उनका सहयोग।

शोध विधि–

वर्तमान अध्ययन में अन्तः विषयी एवं बहुविषयी सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन प्राथमिक स्त्रोतों के साथ–साथ द्वितीयक स्त्रोंतों पर भी आधारित है। सामाजिक क्रिया विधि, सिद्धान्त, संरचना का प्रयोग शोध लेखन हेतु किया गया है। इस शोध कार्य का मुख्य विषय का वर्णन एवं लिपिबद्ध करने हेतु ऐतिहासिक, वर्णात्मक विश्लेषणात्मक क्रियाविधि को अपनाया गया है। इस शोध में स्त्रोंतो का नवीन मूल्यांकन किया गया है।

प्राथमिक स्त्रोंत –

फ्रेडा बेदी द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन तथा कुछ लेखकों द्वारा व्यक्तिगत लेखन, सरकारी रिपोर्ट, समाचार पत्र, भिक्षुओं का साक्षात्कार जिनके साथ फ्रेडा बेदी ने कार्य किया तथा उन स्थानों का निरिक्षण करना जहॉ उन्होंने प्रस्थान किया था। यह शोध में मुख्यता मौखिक अध्ययन पर आधारित है।

- फ्रेडा बेदी के पुत्र कबीर बेदी से टेलीफोन और ई. मेल द्वारा संपर्क किया गया।
- फ्रेडा बेदी की सहायक अनीला पेमा जेगमों से टेलीफोन द्वारा संपर्क किया गया।
- बी0बी0सी0 पत्रकार एंड्रिव व्हाइटहेड से ई0 मेल द्वारा संपर्क किया गया।
- सरकारी अभिलेखों का भी उल्लेख किया गया है।
- बौद्ध मठों का निरिक्षण किया गया जहाँ–जहाँ फ्रेडा बेदी उपस्थित थीं।
- बौद्ध भिक्षुओं का साक्षात्कार जिनसे फ्रेडा बेदी मिल चुकी थी।
- उन स्थानों का निरीक्षण जहाँ वह गयीं थी।
- फ्रेडा बेदी द्वारा लिखी गयी पुस्तकें।

द्वितीय स्त्रोंत –

किताबें, मैगजीन, ब्लॉग, विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों की पुस्तकें तथा अन्य संस्थानों की सहायता ली गई है। उपरोक्त सामग्री के संकलन पश्चात् गहन विश्लेषणोंपरान्त सार्थक निष्कर्ष पर पहुंया गया है।

परिकल्पनाः–

किसी भी शोध में परिकल्पना समस्या एवं समाधान के मध्य एक मजबूत कड़ी होती है। यह समस्या को समाधान तक पहुंचाती है। परिकल्पना अनुसंधान की सम्पूर्ण कार्य रेखा को प्रदर्शित एवं समस्या का सीमांकन करती हैं। इस अध्ययन का वैज्ञानिक आधार देने के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है तथा इसके

प्रमाणिकता का परीक्षण का प्रयत्न किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

- फ्रेडा बेदी भारत देश को एक आजाद भारत देश के रूप में देखना चाहती थीं इसीलिए उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया।
- फ्रेडा बेदी भारत आने के पश्चात् कई धर्मों के सम्पर्क में आयी परन्तु 'विपासना' सीखने के पश्चात् फ्रेडा को सुख और शांति मिली जिसकी वजह से उन्होंने बौद्ध धर्म को अपनाया।
- तिब्बती बौद्ध धर्म के लिए फ्रेडा ने तिब्बती शरणर्थियों के लिए स्कूल खोले जहां आध्यात्मिक शिक्षा के साथ–साथ बाकी विषयों को पढ़ाया जाता था।

अध्याय प्रारूपः

प्रथम अध्यायः–

फ्रेडा बेदी के जीवन के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया है।

द्वितीय अध्यायः–

फ्रेडा बेदी ने किस प्रकार भारत को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष किया तथा किस प्रकार सत्याग्रह आंदोलन में सत्याग्रही बन कर भारत को आजादी दिलायी।

तृतीय अध्यायः–

फ्रेडा बेदी का किस प्रकार बौद्ध धर्म से परिचय हुआ तथा बौद्ध धर्म की दीक्षा ली उसका विवरण किया गया है।

चतुर्थ अध्यायः–

महिलाओं को उनका स्थान दिलाने के योग्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

पंचम अध्यायः– निष्कर्ष।